जीभ पर लगी चोट जल्दी ठीक हो जाती है लेकिन जीभ से लगी चोट कभी ठीक नहीं होती।
– अज्ञात

कांटे की रही टक्कर

राष्ट्रपति ट्रंप चुनाव से पहले ही कह चुके थे कि अगर नतीजे उनके खिलाफ आए तो जरूरी नहीं कि वे उन्हें चुपचाप स्वीकार कर ही लेंगे। मतगणना के दौरान भी उन्होंने धांधली के आरोप लगाते हुए कोर्ट जाने की धमकी दी है।

मनमोहन सिंह।।

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के लिए वोट पड़ने के दूसरे दिन भी मतों की गिनती का काम चल ही रहा है। यह कोई सामान्य स्थिति नहीं है, क्योंकि नतीजे आम तौर पर वोटिंग की रात में ही आ जाते हैं। कांटे की इस टक्कर में अभी तक यह साफ नहीं हो सका है कि ऊंट आखिर किस करवट बैठेगा, मगर इन चुनावों को ऐतिहासिक बनाने वाले कारक और भी हैं। राष्ट्रपति ट्रंप चुनाव से पहले ही कह चुके थे कि अगर नतीजे उनके खिलाफ आए तो जरूरी नहीं कि वे उन्हें चुपचाप स्वीकार कर ही लेंगे। मतगणना के दौरान भी उन्होंने धांधली के आरोप लगाते हुए कोर्ट जाने की धमकी दी है। अमेरिका में भय और आशंका का जैसा माहौल देखा जा रहा है, वैसा हालिया इतिहास के किसी चुनाव में नहीं देखा गया। न सिर्फ वाइट हाउस की सुरक्षा बढ़ाई गई है, बल्कि तमाम बड़ी दुकानों के बाहर भी इस तरह के इंतजाम किए जा रहे हैं कि दंगाई उन्हें आसानी से निशाना न बना सकें। लोगों को डर है कि कहीं ट्रंप समर्थक राइफलें लेकर सड़कों पर न निकल आएं।

बहरहाल, यह सब अमेरिका के लिए भले नया हो, कई अन्य लोकतंत्रों में ऐसी स्थितियां देखी जाती रही हैं। अभी तक के नतीजों पर गौर करें तो ट्रंप का चुनाव अभियान बहुत मजबूती से संचालित हुआ जान पड़ता है। चुनाव पूर्व सर्वेक्षणों में डेमोक्रेटिक उम्मीदवार जोसफ बाइडन बहुत आगे दिखाए जा रहे थे और उनकी बढ़त का फासला दस फीसदी तक दिखाया जा रहा था। लेकिन जिस तरह की टक्कर दोनों प्रत्याशियों में दिख रही है, उससे लगता है कि अमेरिकी मतदाताओं के बीच ट्रंप की पकड़ कमजोर नहीं हुई है।

उनका काम करने का अंदाज, उनके फैसले और बयान अमेरिका के बाहर उनकी छवि चाहे जैसी भी बनाते हों, अमेरिकी समाज का बड़ा हिस्सा इसे सहज रूप में लेता है। इसका मतलब यह भी है कि अमेरिकी समाज की जैसी छवि हमने अपने मन में बना रखी है, वह हकीकत से काफी दूर है।

अमेरिका को हम जिन आधुनिक मूल्यों से जोड़कर देखते रहे हैं, उनकी धज्जियां उड़ाते हुए ट्रंप अमेरिकी समाज के एक बड़े हिस्से में मान्य बने रहते हैं तो यह बताता है कि हमें अमेरिकी समाज को देखने–समझने का तरीका बदलना होगा। एक गुत्थी यह भी है कि 'ब्लैक लाइव्स मैटर' जैसे सघन आंदोलन के बीच हुए इन चुनावों में ट्रंप को मिले अश्वेत वोट पिछले चुनावों की तुलना में दो फीसदी बढ़ गए हैं। उनके लिए सकारात्मक साबित हुए चुनावी कारकों में एक उनकी यह उपलब्धि भी है कि अमेरिका में बेरोजगारी का स्तर उन्होंने ऐतिहासिक रूप से नीचे ला दिया। दूसरे छोर से देखें तो डेमोक्रेटिक प्रत्याशी जोसफ बाइडेन के व्यक्तित्व में अलग से कोई चमकीली बात भले न चिह्नित की जा सके, पर मुद्दों की ताकत शुरू से उनके साथ रही है। कुल वोटों की गिनती में वे ट्रंप से आगे हैं और राष्ट्रपति पद पर उनका दावा भी ज्यादा मजबूत माना जा रहा है। देखें, यह चमत्कारिक चुनाव आगे क्या रंग दिखाता है।

चिंता

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

ज्ञान और जीवन से महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, परशुराम एवं वाल्मीकि जैसे विद्वान शिक्षा लेते हैं और जिसे मनुष्य तो मनुष्य, एक पशु के भी अधिकारों की चिंता हो, क्या आपको लगता है कि ऐसे श्रीराम अपनी गर्भवती पत्नी के अधिकारों की चिंता नही करेंगे? जो अपने पति के साथ वन जाने के लिए सारे जग से लड़ पड़ी हो, जिन्होंने राजकुमारी होकर भी १३ वर्ष वन में हंसते हुए निकाल दिए एवं अंतिम १ वर्ष में जिन्होंने अकल्पनीय दुख भोगा हो, जो महावीर हनुमान के साथ केवल इसलिए लंका से नही गयी क्योंकि इससे उनके पति का यश कम होगा, इतने कष्टों के बाद भी जिनका मुख मलिन तक ना हुआ हो, क्या आपको लगता है कि वो माता सीता अंत समय मे अपने पति के विरुद्ध बोलेंगी?

संपादकीय

जवाबदेही का सवाल

सारांश यह है कि इस्लाम और पश्चिमी सभ्यता, दोनों में समानता की विचारधारा गहरी है लेकिन इस्लाम में समानता के इस मंत्र को सुन्नाह ने खारिज कर दिया जबकि पश्चिमी सभ्यता ने इसे अपने देश तक सीमित करके खारिज किया। अतः सुधार की जरूरत दोनों में है। इस्लाम को मानवता के प्रति जवाबदेही स्वीकार करनी होगी और पश्चिमी सभ्यता को संपूर्ण मानवता के प्रति जवाबदेही स्वीकार करनी होगी। दूसरा सवाल दोनों विचारधाराओं में सर्व–व्यापकता का है। दोनों सभ्यताओं में दूसरा अंतर सर्व–व्यापकता का है। इस्लाम में अल्लाह को सर्वव्यापी माना गया। फ्रांस की क्रांति में भी सभी को स्वतंत्रता, समानता और बिरादरी के दायरे में लाया गया। लेकिन अंतर यह है कि इस्लाम की सर्व–व्यापकता मनुष्य के विचार के बाहर है। अल्लाह समाज के अतिरिक्त है। अल्लाह के कहे की व्याख्या सुन्नाह द्वारा निर्धारित हो जाती है और इसके ऊपर कोई चर्चा नहीं हो सकती है। जनता के प्रति इस्लाम की कोई जवाबदेही नहीं है। इसकी तुलना में फ्रांस की विचारधारा की सर्व–व्यापकता मनुष्यों में ही है और वह संपूर्ण मानवता के प्रति जवाबदेह है। इस विचारधारा पर कोई भी मनुष्य प्रश्न उठा सकता है। इसलिए पश्चिमी सभ्यता में परिवर्तन देखा जा सकता है जो कि इस्लाम में नहीं देखा जाता है। इस्लाम की सर्वव्यापी अल्लाह के प्रति जवाबदेही और फ्रांस की सर्वव्यापी मानवता के प्रति जवाबदेही में कोई मौलिक अंतर नहीं है लेकिन इनमें समन्वय करने की जरूरत है। जब तक इस्लाम और पश्चिमी संस्कृति. दोनों अपनी इन खामियों को दूर नहीं करेंगे तब तक विश्व में शांति बहाल होना कठिन दिखता है।

लेकिन समय क्रम में दोनों विचारधाराओं ने अलग अलग प्रकार से बराबरी के मंत्र को नकार दिया है। मोहम्मद साहब के बाद इस्लाम की व्याख्या करने का कार्य परंपरा या 'सुन्नाह' ने अपने ऊपर ले लिया।

समानता का आग्रह छूटा

भरत झुनझुनवाला।।

इस्लाम और पश्चिमी देशों के भौतिकवाद, दोनों विचारधाराओं में एक बड़ी समानता यह है कि दोनों में बराबरी के भाव को काफी अहमियत दी जाती है। छठी शताब्दी में अरब देशों में भयंकर असमानता थी। दास प्रथा थी। उस परिस्थिति में पैगंबर मोहम्मद साहब ने क्रांतिकारी पैगाम दिया था कि हर मनुष्य अल्लाह की नजर में बराबर है। इसी प्रकार फ्रांस में 1789 में क्रांति हुई, जिसका मुख्य मुद्दा था 'स्वतंत्रता, समानता, बिरादरी।' वहां भी हर मनुष्य को बराबर माना गया। लेकिन समय क्रम में दोनों विचारधाराओं ने अलग अलग प्रकार से बराबरी के मंत्र को नकार दिया है। मोहम्मद साहब के बाद इस्लाम की व्याख्या करने का कार्य परंपरा या 'सुन्नाह' ने अपने ऊपर ले लिया। इसी से 'सुन्नी' शब्द बनता है।

'आफ्टर द प्रॉफेट' पुस्तक की लेखिका लेसली हेजिल्टन के अनुसार मोहम्मद साहब के बाद पहले दो खलीफा अबू बक्र और उमर के समय तक सादगी और समानता का माहौल बना रहा लेकिन तीसरे खलीफा उस्मान के समय परिस्थिति ने पलटा खाया। उन्होंने मदीना में एक विशाल राजमहल बनवाया जिसमें संगमरमर के खंभे लगाए गए। उस महल में विदेशों से लाया गया

भोजन परोसा जाता था। खलीफा उस्मान ने विशाल भूमि के क्षेत्र, हजारों घोड़े और दास अपने नजदीकी लोगों को दान में दिए। सऊदी अरब जैसे देशों में आज यह असमानता चरम रूप में देखी जा सकती है। यह असमानता मोहम्मद साहब के विचारों के विपरीत दिखती है। लेकिन इस सामाजिक व्यवस्था के पवित्र कुरान के अनुरूप होने या न होने की व्याख्या सुन्नाह द्वारा की जाती है। इसलिए आज यह असमानता इस्लामिक देशों में इस्लाम के अनुरूप मानी जाती है। इस असमानता पर सवाल उठाने का किसी को हक नहीं है। इस्लाम की इस असमानातावादी वर्तमान व्याख्या में परिवर्तन नहीं हो पा रहा है।

इस विषय पर मुझे कुरान और सुन्नाह में अंतर दिखाई देता है। कुरान की आयत 2.256 में स्पष्ट कहा गया है कि 'धर्म में कोई जोर जबरदस्ती नहीं है।' लेकिन मोहम्मद साहब के कहे हुए वाक्यों में बुखारी की हदीस 9.59 में कहा गया कि जो 'इस्लाम धर्म को बदल दे उसे मार दो।' इस प्रकार कुरान से समानतावादी और धार्मिक स्वतंत्रता के मूल संदेश को सुन्नाह ने असमनातावाद और कट्टरवाद में परिवर्तित कर दिया है। इस परिवर्तन को अब पुनः रास्ते पर लाना कठिन हो गया है क्योंकि कुरान की आयत 3.92 में कहा गया कि मोहम्मद साहब आखिरी पैगंबर हैं। हालांकि इस आयत को दो तरह से समझा जा सकता है।

पहला कि उस समय तक जितने पैगंबर थे उनमें मोहम्मद साहब आखिरी थे। दूसरा कि भविष्य में होने वाले पैगंबरों में भी वे आखिरी थे। सुन्नाह के अनुसार मोहम्मद साहब आने वाले संपूर्ण भविष्य के आखिरी पैगंबर थे इसलिए मोहम्मद साहब ने जो संदेश दिया और जिसकी सुन्नाह ने असमानतावादी व्याख्या की, उसमें अब कोई परिवर्तन करने की संभावना नहीं रह जाती है। यही कारण है कि आज इस्लाम धर्म ने एक निश्चित रूप धारण कर लिया है जिसमें परिवर्तन की कोई गुंजाइश नहीं है और इस्लामी सभ्यता रुक सी गई है। दूसरी ओर लगभग ऐसी ही परिस्थिति पश्चिमी संकृति की भी है।

सूडोकु नवताल-5527

मध्यम

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2					3			1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

Jagrutidaur.com, Bangalore

सूडोकु नवताल -5526 का हल

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5

अपना ब्लॉग

बराबरी की विचारधारा का प्रचलन

मोहन। यूरोप में पहली सहस्त्राब्दी में ईसाई लोगों ने आपस में भारी मारकाट की जिसे इनक्वीजिशन नाम से जाना जाता है। इसके बाद 1789 में फ्रांस में क्रांति हुई और बराबरी की विचारधारा का प्रचलन हुआ। लेकिन इस बराबरी की विचारधारा के विपरीत क्रांतिकारी फ्रांस ने ही उत्तरी अफ्रीका के विशाल क्षेत्र को अपना उपनिवेश बनाया और उसमें तमाम लोगों पर अत्याचार किए। पिछली सदी में उपनिवेशवाद के समाप्त होने के बाद फ्रांस समेत पश्चिमी सभ्यता की बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपने क्रूर भौतिकवाद को पोषित करने के लिए व्यापार के माध्यम से गरीब देशों का शोषण किया। बराबरी की जो व्याख्या फ्रांस की क्रांति में की गई थी, उसे इन्होंने अपने देश की सीमा के अंदर तक सीमित कर दिया। सीमा के बाहर दूसरे देशों के लोगों के साथ बर्बरता आज भी मान्य है। फिर भी कहना पड़ेगा कि पश्चिमी सभ्यता में परिवर्तन होता रहा है। किसी समय उपनिवेशवाद को मान्यता थी लेकिन आज उसकी मान्यता नहीं है।